चाचा चौधरी के कारनामे अब स्थाई रूप से दीवाना में देखिये

गुरुदास परचानी, बरेली

प्र०—गद्य, पद्य में अब तक आपने कितने पापड़ बेले हैं ?

उ०—बेल रहे पापड़ मगर, गिनती से महरूम
अब तक कितने 'बिल-चुके', काकी को मालूम ।

मातादीन गर्ग लश्कर (ग्वालियर)

प्र०—मनोज कुमार ने 'रोटी, कपड़ा और मकान' बना क खूब पैसा बटोरा । आप क्या बनाएंगे ?

उ० —काका बना रहे हैं प्लान, ऐसी खोलें एक दुकान ।
शो-केसों में सजें महान, चमचा, मक्खन, बेईमान ।

जीवनराम कुमार, सहर्षा (बिहार)

प्र० : लक्ष्य तक पहुंचने का आसान तरीका क्या है ?

उ० : कर्मक्षेत्र अपनाइये, बन कर निष्ठावान,
पहुंच लक्ष्य के कक्ष में, हो उन्नति उत्थान ।

शिशर कुमार मुन्ना, कोसी कालोनी

प्र० : संसार में सबसे अच्छा दोस्त कौन है काका ?

उ० : किसको मानें दोस्त हम, यह कलिकाल विचित्र,
नोटों का बंडल समझ, सबसे बढ़िया मित्र ।

श्रीकांत सिंह, शाहगंज

प्र० : मर्द कब जोरू का गुलाम बन जाता है ?

उ० : आप मैट्रिक फेल हैं, बीवी बी. ए. पास,
उनकी साड़ी धोइये, बनकर पत्नी दास ।

अविनाश मस्कीन, पानीपत

प्र० : फूलों की सेज भी कब चुभने लगती है ?

उ० : कल तक जो अनुकूल थे, आज होंय प्रतिकूल,
तब फूलों की सेज भी बन जाती है शूल ।

विनोदपुरी रन्जू, लुधियाना

प्र० : प्रेमिका का गुस्सा कब ठंडा होता है ?

उ०: लाकर के दे दीजिये उसके मन की चीज,
खिल्ल-खिल्ल हंसने लगे, तज झुंझलाहट खीज ।

गुलशन पामर, मुक्तसर (पंजाब)

प्र० : आशिक के कदम कब डगमगा जाते हैं ?

उ० : टाला-माला बाँधकर माशूका उड़ जाय,
उजड़ जाय जब आशिकी, दिल धड़कन बढ़ जाय ।

रवीन्द्र कुमार, सुनील कुमार, कटनी

प्र० : ईमानदार की पहिचान बताइये काका जी ?

उ० : खा जाये ईमान को, लेवे नहीं डकार,
उस ईमानी जीव पर काका कवि बलिहार ।

सत्यनारायण गुप्ता, डनलप स्टेट (बंगाल)

प्र० : आप विदेशी चीज पसन्द करते हैं या देसी ?

उ० : लाइफ देसी, वाइफ विदेशी ।

लक्ष्मण संतोष गुप्ता, शाहगंज

प्र० : शाहजहाँ ने बीवी की याद में ताजमहल बनवाया था आप क्या बनवायेंगे ?

उ० : गेहूं का स्टाक कर, बोरों में भरवायँ,
ताजमहल में क्या धरा, नाजमहल चिनवायँ ।

कारजसिंह पुल्लर, डोंगरगढ़

प्र० : लड़कियाँ दर्पण के सामने खड़ी होकर क्या सोचती हैं?

उ० : कोई कहता मैं ऐसी हूं, कोई कहता मैं वैसी हूं,
बतादे आईना सचसच, तेरे दिल में मैं कैसी हूं ।

हरिप्रकाश गुप्ता प्रिंस, कासगंज

प्र० : हाथरस में मेरी ससुराल है काका जी, तो आप मेरे···

उ० : छोड़कर बेशर्मी अब तुम, शर्म करना सीखना,
जब कभी देखो हमें तो लम्बा घूंघट खींचना ।

सुनील कुमार सेंगर, जनकपुर रोड

प्र० : गधे रेंकते क्यों हैं ?

उ० : जब गदही सुनती नहीं, गदहे की फरियाद,
रेंक-रेंक कर आपकी, करता है वह याद ।

रामसेवक बंसल, पीलीभीत,

प्र० : जब कभी पत्नी गर्म हो जाय तो उसे ठंडी कैसे करें ?

उ० : चिल्लाये वह जिस समय नेत्र लीजिये मूंद,
चुपके से टपकाइये, आँसू की दो बूंद ।

रामदयाल शर्मा, इलाहाबाद,

प्र० : बहुत दिनों से बीमार हूं, बड़ा दुखी हूं क्या करूं ?

उ० : देह धरे का दंड तो, सब काहू को होय,
ज्ञानी काटे ज्ञान से, मूरख काटे रोय ।

इन्द्रदेव दीक्षित, दिल्ली-५१

प्र० : कहिये काका महिलावर्ष में काकी को क्या लाये ?

उ० : जब वे महिलावर्ष में मना रहीं थी हर्ष,
हम ले आये खींचकर काकी जी का पर्स ।

किशोर कुमार पमनानी, इंदौर

प्र० : सब रसों को छोड़कर, आपने हास्यरस ही क्यों अपनाया ?

उ० : खुलजाती हैं हास्य से, दिल-दिमाग की नस्स,
रस का राजा 'हास्य रस' और सभी नीरस्स ।

कुलदीप लक्ष्मण, डनलप शाहगंज

प्र० झूला उत्सव, कृष्ण जी के जन्म से पहिले ही शुरू क्यों हो जाता है ?

उ० : उनकी शिकायत क्यों कर रहे हो गुरू,
आप अपने बच्चे का उत्सव नौ महीने पहले कर देना शुरू ।

देवीदयाल अलमस्त, अमृतसर

प्र० : मैं नया कवि हूं काका जी, आपातकाल में क्या लिखूं?

उ० : कविता मक्खन छाप, छोड़ व्यंग्य के छंद,
वरना डी. आई. आर. में हो जाओगे बंद ।

● दीवाना को अधिक रोचक और मनोरंजक बनाने के लिए अपने सुझाव भेजिये ।

परोपकारी
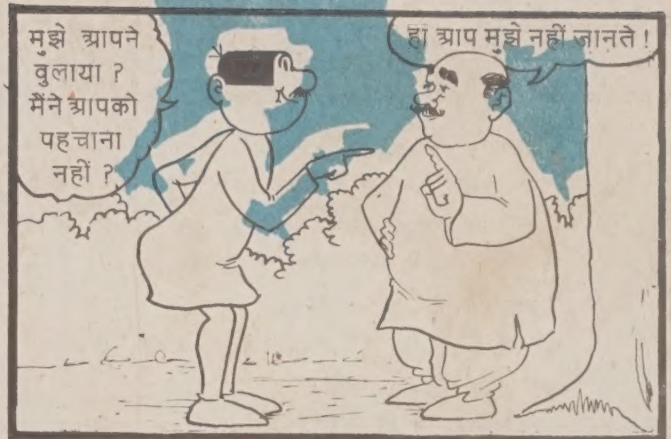
बात बेबात की

रोना लैला शो

आज भारत भर में रो ना लैला नाम का स्यापा हो रहा है । टी.वी. पर भी रो ना लैला रोती नजर आती है और स्टेज पर भी । इतनी लोकप्रियता पहले केवल एक बार देखने में आई थी, जब एक आदमी के कुत्ते के सिर वाला बच्चा पैदा हुआ था । रो ना लैला की आवाज कैसी है ? यह आज तक किसी को पता नहीं लगा क्योंकि आर्केस्ट्रा ही इतने जोर से बजता है कि बाकी सारी आवाजें उसमें डूब कर रह जाती हैं । खैर साहब, हमने अपना एक संवाददाता कचेड़ू राम रो ना लैला का इन्टरव्यू लेने भेजा था, उसका पूरा विवरण प्रश्नोत्तर सहित हम प्रस्तुत करते हैं !

प्र० : आपने रोना कब से शुरू किया ?

उ० : पैदा होते ही, जैसे ही डाक्टर ने थप्पड़ मारा मैं रो पड़ी थी । तब से रोती ही आ रही हूं, अब तो रोना ही जीवन हो गया है ।

प्र० : आप स्टेज पर रोते समय उछलती कूदती भी हैं ।

उ० : जी हां, इसके पीछे भी एक राज है । मैं टाफियां बहुत खाती हूं, टाफियों को हमेशा अपने पास रखती हूं । टाफियों की महक पाकर चींटियां भी आ जाती हैं । इसलिये प्रायः मेरे शरीर पर हर समय चींटियां रेंगती रहती हैं, वह काटती हैं और मैं उछलती कूदती हूं ।

प्र० : चलो शुक्र है हम तो यही सोचते थे कि आपको पागल कुत्ता काटता होगा । अब आप यह बताइये कि आज भारत में सब आपके नाम को क्यों रो रहे हैं ?

उ० : सीधी सी बात है मेरे पास ५-६ सौ साड़ियां हैं इसलिये सारी औरतें ईर्ष्या के मारे रोती हैं । मर्द इसलिये रोते हैं कि मेरी साड़ियों के कारण बार-बार मांगने पर उन्हें एक-दो साड़ियां बीवियों को लेकर देनी ही पड़ती हैं । कुछ लोग इस गुस्से में रोते हैं कि मैं प्रायः उस भाषा में गाती हूं जो अधिकतर श्रोता समझ न पायें । बच्चे शायद इसलिये रोते हैं कि गाते समय मुद्रायें स्कूल टीचर जैसी होती हैं, उन्हें अपना होमवर्क याद आ जाता होगा ।

दबादब भर दे अन्दर

माल मेरा सब रखियो बैंक के नम्बर वाले लॉकर,
जिन्दगी दी कमाई साथिया दिया भर अन्दर।
दबादव भर दे अन्दर, रुपीया है भागता वन्दर,
दबादव भर दे अन्दर, रुपीया दा पहला नम्बर।
ओ माल मेरा
चार चौकीदार तेरे जागण हमेशा,
एक चाबी मैं राखूं एक एकाऊंटेंट राखन।
जिन्दगी दी कमाई
हिन्द-हिन्द पैसा तेरा डंका वाजे,
नाल वजे तूती जान देवें लोग तेरे कारण।
जिन्दगी दी कमाई
हर दम रुपीया तेरी खैर होवे,
तू वेड़ा पार लगावे सवका तारण।
जिन्दगी दी कमाई,
दबादव भर दे अन्दर

आये अब कुछ जो आइस क्रीम आये,
उसके वाद आये तो डकार आये।
वसें मिनी से मेहता साहव उतरे,
उसके वाद कंडक्टर को जुकाम आये।
कर रहा था मैं धोवी का हिसाव,
आज वहुत से फटे कपड़े याद आये।
आये अब कुछ जो आइस क्रीम आये,
उसके वाद आये तो डकार आये।

कभी पहले तो न थी

वात करनी मुझे मुश्किल कभी ऐसी तो न थी,
जैसी गले में हड्डी फंसी कभी पहले तो न थी।
ले गया छीन के कव्वा कटलेट मेरे चार,
भूख मुझे ऐ पेट कभी ऐसी तो न थी।
उसकी आंखों ने खुदा जाने नजर कैसी लगाई,
खिचड़ी मेरी पहले कभी ऐसी जाली तो न थी।
सिंगाड़ा-पॉम्परेट मेरी दुश्मन थी हमेशा लेकिन,
जैसी गले में आज हड्डी फंसी कभी पहले तो न थी।

वैसे तो यंत्र मानव पर सम्पूर्ण २१ वीं सदी में अनुसंधान होता रहा परन्तु केवल सदी के अन्तिम वर्षों में ही ये यंत्र मानव आकार के बनने लगे तथा पासीड्रान मस्तिष्क के आविष्कार से इन यांत्रिक मानवो में मौखिक आदेश समझने, कुछ सीमा तक सोचने, निर्णय करने तथा बोलने की क्षमता आ गयी। इस से श्रम संगठनों (लेबर यूनियन) तथा कुछ धार्मिक संस्थाओं ने अपने हितों की रक्षा के लिये यंत्र मानवों के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया। विवश होकर विश्व की सरकारों को संयुक्त रूप से धरती पर यंत्र मानवों के साधारण श्रम कार्यों के लिए प्रयोग पर कठोर प्रतिबंध लगाना पड़ा। यंत्र मानवों का प्रयोग धरती पर केवल वैज्ञानिक अनुसंधान के कार्यों तक ही सीमित किया गया। हाँ यंत्र मानवों का प्रयोग दूसरे ग्रहों पर या अंतरिक्ष में श्रम कार्यों के लिये किया जाने लगा। मानव जाति दूरगामी हितों को ध्यान में रख यंत्र मानवों का कुछ विशेष नियमों तथा सिद्धांतों पर बनाना अनिवार्य हो गया।

यंत्र मानव विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास यंत्र मानवों का मूलसूत्र

एक अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के अन्तर्गत यंत्र मानव तीन ठोस नियमों पर बनाये जाते हैं—यह तीन नियम यंत्र मानवों के मस्तिष्क सर्किटों में इस प्रकार गहरे अंकित किए जाते हैं कि किसी दशा में यांत्रिक मानव इन नियमों का उल्लंघन नहीं कर पाता—यह तीन नियम हैं—

1 यंत्र मानव किसी दशा में भी अपने कार्य या निष्क्रियता से मनुष्य को हानि या आघात नहीं पहुंचायेगा।

2 यंत्र मानव मनुष्य की आज्ञा का पालन करेगा यदि उससे पहले वाले नियम का उल्लंघन न हो।

3 यंत्र मानव स्वयं को हानि पहुंचने से बचायेगा—यदि उससे पहले व दूसरे नियम से विरोध उत्पन्न न हो।

वर्तमान अभियान दल के सदस्य हैं

राजन

यांत्रिक मनोविज्ञान विशेषज्ञ

शुक्र ग्रह पर राजन

प्रथम अभियान दल द्वारा बनाये भूमिगत तहखाने में कुछ अध्ययन कर रहा है। इतने में दिलीप ऊपर से हड़बड़ाहट में सीढ़ियां उतरता हुआ आया।

राजन—क्या हुआ? इतने घबराये हुये क्यों हो?

दिलीप—पवन लौटकर नहीं आया—

राजन—तुमने उसे सीलीनियम लाने भेजा था?

दिलीप—हां, पांच घण्टे हो गये उसे गये, लौटकर नहीं आया।

पवन उस यंत्र मानव का नाम था जो यह दो विशेषज्ञ प्रयोग के लिए साथ ले गये थे। यंत्र मानव का वास्तविक मॉडल नाम पी.वी.एन.—११०० (P.V.N.—1100) था लेकिन सुभीता के लिए उसे पवन के नाम से ही पुकारा जाता था।

राजन आश्चर्य चकित रह गया। अविश्वास भरे स्वर में बोला—

—"यह कैसे हो सकता है?"

दिलीप—मैं क्या जानूं? मैंने रेडियो तरंगों से उससे सम्पर्क करने का यत्न किया लेकिन शुक्र ग्रह की सूर्य वाली ओर वैसे भी रेडियो काम नहीं करता—शार्टवेव पर धीमा सा संकेत मिला—वह भी केवल उसकी उपस्थिति का सूचक बस—यह देखो चार्ट पर मैंने उन संकेतों को बिन्दियों में दिखाया है।

राजन—दिलीप से चार्ट लेकर देखने लगा।

दिलीप ने राजन के कन्धे पर से झांकते हुये कहा, "यह लाल क्रॉस का निशान सीलीनियम भंडार का है। शुक्र पर शुद्ध सीलीनियम के भंडार हैं।"
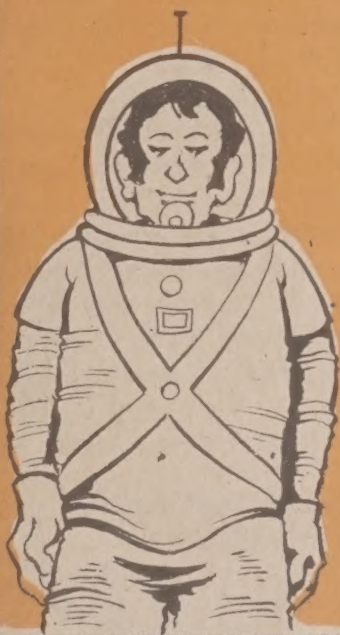
राजन चार्ट को घूरे जा रहा था।

"यह असम्भव है। बिन्दियां क्रास के चारों ओर हैं। इसका अर्थ पवन सीलीनियम भंडार क्षेत्र के चारों ओर मूर्ख की तरह चक्कर काट रहा है?"

दिलीप—तुम स्वयं देख रहे हो।

वातावरण गम्भीर हो गया।

दिलीप—"दो घंटे तक मैं संकेत अंकित करता रहा। इस बीच उस यंत्र मानव के बच्चे ने चार बार भंडार क्षेत्र के चार चक्कर काटे।"

राजन के चेहरे पर पसीने की बूंदें छलछला आईं।

"हमें शीघ्र सीलीनिमय न मिला तो हम जिन्दा ही भुन जायेंगे। सूर्य के सबसे निकट का ग्रह होने के कारण यहां का तापमान जला देने वाला है। सीलीनियम न मिलने का अर्थ हम सूर्य की आग बरसाती किरणों के ताप को विद्युत में परिवर्तित करने वाले बिम्ब कोष्ट नहीं बना पायेंगे गर्मी से रक्षा करने वाले बिम्ब कोष्ट न बनाने का अर्थ हमारा दाह संस्कार......"
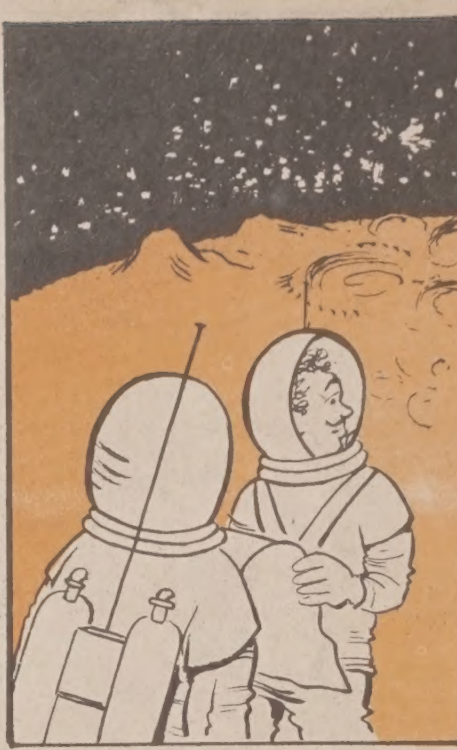
दिलीप के स्वर में रोष उभर आया। "हम दो आदमियों को केवल एक यंत्र मानव के साथ शुक्र ग्रह के जहन्नुम में भेजकर हमारे विभाग ने दुष्ट काम किया है।"

राजन—"इसमें उनकी क्या गलती? हम खुद ही मान गये थे यह मत भूलो।"

एकाएक राजन की आंखें चमक उठीं।

"सुनो पिछले अभियान दल ने छः पुराने मॉडल के यंत्र मानव यहीं छोड़े थे। क्यों न हम उनकी सहायता लें।

दिलीप—हां नीचे वाले स्टोर में पड़े होंगे।

कुछ ही मिन्टों में वे सबसे नीचे वाले तहखाने में पहुंचे व वहां पड़े बड़े-बड़े बक्सों को खोलने लगे। उनमें से विशाल आकार के यंत्र मानवों को निकालने लगे।

दिलीप बोला—"जरा इन यंत्र मानवों को देखो कितने बड़े हैं। दस फीट तो छाती ही होगी इनकी!"
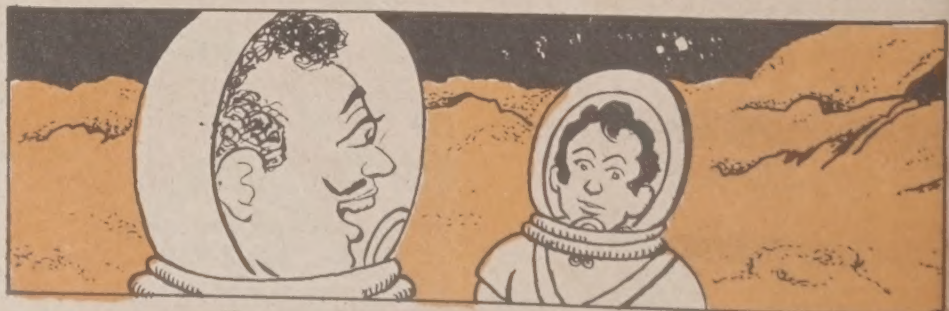
राजन—हां पुराने मॉडल के हैं न! इनमें गियर वगैरह बड़े-बड़े उस अविकसित जमाने के हैं। हमें तो यह कबाड़खाना ही लगता है—अब जरा इन्हें जीवन तो दो...

दिलीप एक यंत्र मानव की छाती से एक प्लेट हटाकर अन्दर बने खाने में अणु शक्ति (बैटरी) रखता है जो यंत्र मानवों की जान है।

राजन...कुछ नहीं हुआ...यह तो वैसे ही मुर्दे पड़े हैं!

दिलीप—बिना मनुष्य की आज्ञा मिले यह कुछ नहीं कर सकते। दिलीप सबसे निकट के यंत्र मानव की ओर बढ़ता है...और उसकी छाती पर थपकी मारता है।

दिलीप—ऐ! सुनते हो?

यंत्र मानव—"जी मालिक"...एक सपाट सी मशीनी आवाज आयी।

दिलीप राजन की ओर देख कर मुस्कराया। फिर दिलीप ने यंत्र मानव को आदेश दिया, "खड़े हो जाओ।"

यंत्र मानव आज्ञा मिलते ही नट बोल्ट गियरों के हरकत में आने की खट-खट किर्च-किर्च की विचित्र आवाजें करता उठ खड़ा होता है।

यंत्र मानव—"जी मालिक"

दिलीप—"तुम जानते हो एक किलोमीटर क्या होता है?"

यंत्र मानव—"जी मालिक"

दिलीप—हम तुम्हें ऊपर धरातल पर ले जायेंगे और एक दिशा बतायेंगे। तुम्हें उस दिशा में १७ किलोमीटर जाना होगा जहां निकट कहीं एक और यंत्रमावन मिलेगा जो तुमसे आकार में छोटा होगा समझ रहे हो मैं क्या कह रहा हूं?

यंत्रमानव—"जी मालिक"

दिलीप—"तो तुम्हें उस यंत्रमानव को वापिस लाना है। सीधी तरह न आये तो जबरदस्ती..."

दिलीप राजन की ओर मुड़ कर बोला, "सीधे इसी जोकर को सीलीनियम लाने के लिये न कहें?"

राजन—नहीं, मुझे पहले पवन चाहिये। मैं देखना चाहता हूं उसमें गड़बड़ क्या हो गई है।

राजन ने यंत्रमानव को देखकर कहा,

यंत्रमानव—"जी मालिक"

यंत्रमानव अपने-अपने स्वरों को लेकर खटरपटर करते सुरंग में आगे बढ़ते हैं।

"अच्छा तुम मेरे पीछे आओ।"

यंत्रमानव—"क्षमा कीजिये मालिक, मैं ऐसा नहीं कर सकता।"

राजन—"क्यों ?"

यंत्रमानव—"आपको मेरे कंधे पर चढ़ना होगा।"

दिलीप व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला, "हमें इन पर ऐसे ही चढ़ना पड़ेगा जैसे घोड़ों पर ?"

राजन—मैं समझ गया। जिस काल में यह बने थे तब लोग यंत्रमानवों से आशंकित रहते थे इसीलिए उन्होंने ऐसे मॉडल बनाये जो जब तक **कोई मनुष्य सवार न हो तब तक चल फिर न सकें।** —थोड़ी देर बाद राजन व दिलीप एक नक्शे पर झुके थे। दिलीप—"यह नक्शा पुराने दल द्वारा बनाये इस खान क्षेत्र का है। यह लकीरें भूमिगत सुरंगें हैं और बिन्दियां धरातल पर निकलने के द्वार।"

राजन—यह देखो, एक सुरंग उस सीलीनियम भंडार से केवल चार-पांच किलोमीटर पर खुलता है, नम्बर है अ-३९।"

राजन ने यंत्रमानव से प्रश्न किया, "तुमने पिछले अभियान दल के साथ काम किया था तुम इन सुरंग मार्गों से परिचित हो ?"

यंत्रमानव—"जी सरकार।" फिर वही सपाट मशीनी आवाज।

राजन और दिलीप ताप-निरोधक सूट पहनते हैं जो शुक्र ग्रह की भयानक धूप को बीस मिनट तक सहन कर सकता है। भारी भरकम सूट पहनने पर दोनों विशालकाय लगते हैं। एक-एक यंत्रमानवों की गर्दनों पर उचक कर चढ़ जाते हैं।

दिलीप—"बख्तावर सिंह अब हमें अ-३९ मुहाने से बाहर ले चलो।"

क्रमशः

प्रताप सिंह वर्मा—रोहतक : चाचा जी, एक बात तो बताओ, क्या आपका कभी किसी बात पर हमारी चाची से झगड़ा भी होता है या नहीं ?

उ० : वर्मा जी हमने तो झगड़े को जड़ से उखाड़ कर फेंक रखा है। हम तो हर काम आपकी चाची के साथ मिलकर फिफ्टी-फिफ्टी के नियम पर करते हैं। उदाहरणतया सवेरे उठते ही आपकी चाची जी चाय की फरमाईश करती हैं हम चाय बनाते हैं। फिर फिफ्टी-फिफ्टी के कान्ट्रैक्ट के अनुसार वह चाय पीती है। हम बर्तन धोते हैं। अब आप ही बताओ भला झगड़ा कैसे हो ? आप भी हमारे तजुर्बे से फायदा उठायें और आज ही अपने बर्तन धोने वाले नौकर की छुट्टी कर दें।

तसनीम अहमद खां—मुरादाबाद : चाचा जान, मुझे आपका सिर मुर्गे के अण्डे जैसा लगता है, बताओ मैं क्या करूं ?

उ० : जो कुछ मर्जी करो लेकिन एक काम करना इस अण्डे का आमलेट बनाकर मत खा जाना।

अमरजीतसिंह बूंगी—अबोहर : चाचाजी, हमारे सिवा तुम्हारे और कितने दीवाने हैं ?

उ० : कसम से सही गिनती हम नहीं जानते,
तुम्हें भी हम अच्छी तरह हैं पहचानते,
छोड़ो-छोड़ो हमारे तो लाखों दीवाने हैं...।

अजय, विनोद हरितवाल : आपको अलाउद्दीन के चिराग के बारे में कुछ मालूम है ?

उ० : हां ! इतना मालूम है कि वह चिराग हमारे हत्थे अब तक नहीं चढ़ा है।

नयनसुख प्रसाद—हरिद्वार : मेरी आंखों में हमेशा दर्द रहता है। कृपया आप डाक्टर झटका से कोई दवाई पूछकर बताने का कष्ट करें ?

उ० : किसी नीम के पेड़ पर चढ़ जाइये और करेले में मिर्ची का अचार भरके अपनी आँखों में झोंक लीजिये।

गुलशन पामर—मुक्तसर : चाचा जी, पतलू इतना अधिक पतला क्यों है ? क्या इसके हिस्से का माल भी मोटू खा जाता है ?

उ० : पतलू जो का तो यह हाल है
खाये बकरी की तरह
सूखे लकड़ी की तरह।

स्वतन्त्र कुमार डोडा—केसरीसिंह पुर : आप एक बार अपने गुफा नुमी मुंह में कितने रसगुल्ले खा सकते हैं ?

उ० : आप हमारी बात छोड़िये और यह बताइये कि आप हमारे मुँह में एक बार में कितने रसगुल्ले डाल सकते हैं ?

किशन सिंह—अमृतसर : किसी कवि पर अण्डे व सड़े हुए टमाटर फेंकने में श्रोतागणों का कसूर होता है या बोर करने वाले कवि का ? क्या ऐसे भी श्रोता होते हैं जो बोर कविता में भी नहीं उठते ?

उ० : यही सवाल हमने भी एक बार एक धांसू कवि से पूछा था जो कई बार कई सम्मेलनों में पिट चुका था। तो उसने जवाब दिया भाई मैं तो कर्म करता हूं, फल की आशा नहीं करता। (हाँ फल और सब्जियां तो श्रोता बरसा ही देते हैं।) मैं शांतिपूर्वक कविता पढ़नी शुरू करता हूं और पता नहीं क्यों थोड़ी देर बाद श्रोतागण क्रांति पर उतर आते हैं।

मन्जूर हसन—बीकानेर : चाचा संसार में कुल गंजों की संख्या कितनी है ?

उ० : यह खोजबीन का कार्य आप ही करो हसन साहब और जब सब गंजों को गिन चुको तो अपने चाचा का नाम जरूर जोड़ लेना।

इन्द्रपाल एस. इन्द्रजीत—टाटानगर : किसी पर अगर दिल आ जाये तो ?

उ० : तो फिर दुआ करो कि वह भी आ जाये।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : अगर कोई समझकर भी न समझे तो कैसे समझाऊं ?

उ० : तो समझदारी इसी में है कि आप समझ जायें। क्या समझे, नहीं समझे।

विभाषचन्द साहू—ओलपुरा : दिले घायल की दवा ?

उ० : 'मोहब्बत इक तपिशे ना तमाम होती है।
न सुबह होती है उसकी, न शाम होती है।।'

पं० मेवालाल 'परदेशी'—महोबा : अभिनेता बनने की ट्रेनिंग पूना में होती है, लेकिन नेता बनने की ट्रेनिंग कहाँ होती है ?

उ० : 'सूना' में—जी हाँ। शायद आप समझे नहीं। हमारा मतलब 'जेल' के सूनापन से है।

शशि जैन—फिरोजपुर-कैन्ट : लड़का-लड़की में महत्वपूर्ण कौन है ?

उ० : यह तो पता नहीं, पर दोनों एक दूसरे के बिना **'अपूर्ण'** जरूर हैं।

शीलकुमार शर्मा—किग्जवे केम्प : चाचा जी, गाय, भैंस, बकरी आदि जानवर तो घास खाने पर दूध देते हैं, पर इन्सान इतने अच्छे-अच्छे पकवान खाने पर क्या देता है ?

उ० : 'जहर' और 'कहर'

रमेश चुग्घ—लुधियाना : चाचा जी, इन्सान के पूर्वज बन्दर थे, और हम प्रायः किसी इन्सान से किसी इन्सान को कहते सुनते हैं कि—तुम निरे गधे हो, क्या गधे की रेंग रहे हो वगैरह-वगैरह। तो गधे और इन्सान के साथ-साथ बन्दर और गधे का क्या रिश्ता हुआ ?

उ० : बन्दर में यह खूबी है कि वह अपना बन्दरपना नहीं छोड़ता इसलिए उसे कोई गधा नहीं कहता। पर आदमी अक्सर आदमीयत छोड़ देता है और गधा बन जाता है।

याद के. 'सुगन्ध'—रिवाड़ी : एक शेर प्लीज ?

उ० : 'हम उनसे हाले रो-रो कर, बे ताबाना कहते हैं।
उन्हें देखो कि हंस-हंस कर, मुझे दीवाना कहते हैं।'

चाचा बातूनी
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

मदहोश

बोलते अक्षर

शाख साबुन अयाल

लंगड़ी दीमक

लटें जोड़ा गुल सप्तर्षि

जल मग्न धड़क नक्काशी
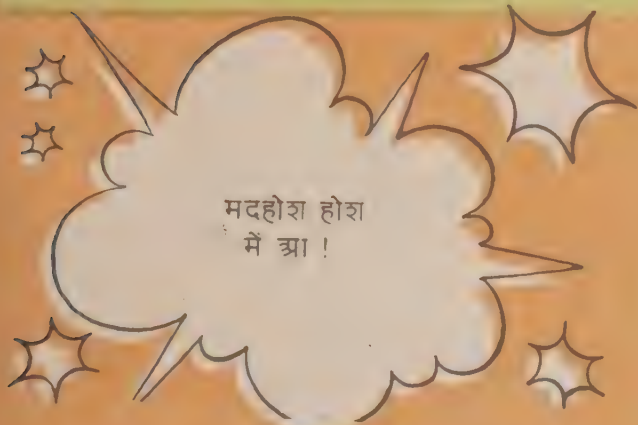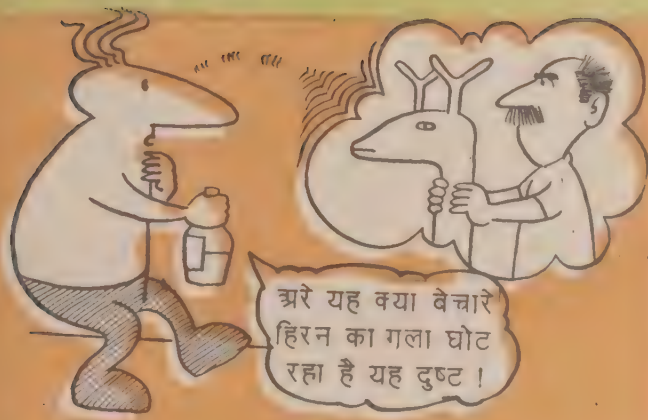
फैणटम
और गुफा का दैत्य
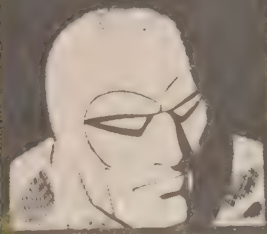
चार सौ साल पहले बंगाला देश में डाकुओं के हमले मे केवल एक यही पुरुप बचा।
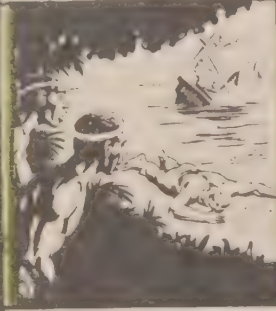
मैं अपना सारा जीवन डाकुओं को नष्ट करने में लगा दूंगा।
उसने अपने पिता की खोपड़ी पर हाथ रख कर शपथ ली और यह पहला फैण्टम बना।
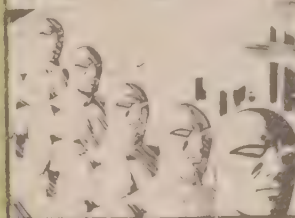
चलना-फिरना भूत फैण्टम है वह मर नहीं सकता।
बेटे बाप का अनुसरण करते रहे, पीढ़ियां बीत गई मगर करोडों लोग यही सोचते रहे कि फैन्टम कभी नहीं मरता......।

अब हमारा फैण्टम २१ वीं पीढ़ी का है। बुराइयों को खत्म करने वाला यह फैण्टम सब काम अकेले ही करता है।
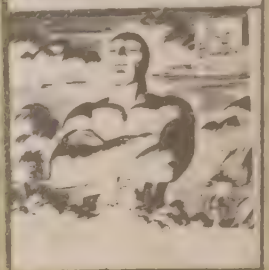
जगल के अन्त में एक गरीब किसान अपने खेत में हल जोत रहा है।
रीमा रुको! यह पत्थर कभी खत्म नही होंगे।
ठीक है दादाजी।

रीमा!
दादा जी क्या बात है?
एक हीरा!
हीरा क्या होता है दादाजी?

एक गरीब किसान को अजीब चीज मिल जाती है।
रीमा, मैं इस हीरे से एक नही अनेक गांव खरीद सकता हूं।
दादा जी आप इसका क्या करेंगे?

यह तुम्हारे लिए है रीमा, तुम्हें पढ़ाऊंगा......तुम्हारी धूमधाम से शादी करूंगा......और बाकी इन गरीब लोगों के लिये।

रीमा यह बात किसीको नहीं बताना। बुरे लोग तुमसे यह छीनने की कोशिश करेंगे।
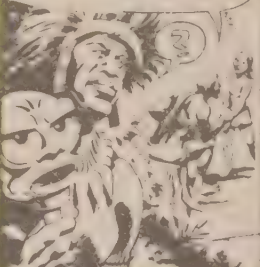
बूढ़े, तुमने क्या छुपा रखा है?
......तुमको इसमे क्या मतलब!
रीमा बैल को बांध दो और घर आ जाओ।

रीमा जरा बताओ तो इसने क्या छुपा रखा है।
हम अमीर हो गये है. मेरे दादा मुझे अच्छे स्कूल में पढ़ायेंगे।
और जब मेरी शादी होगी मुझे बहुत-सा धन देंगे
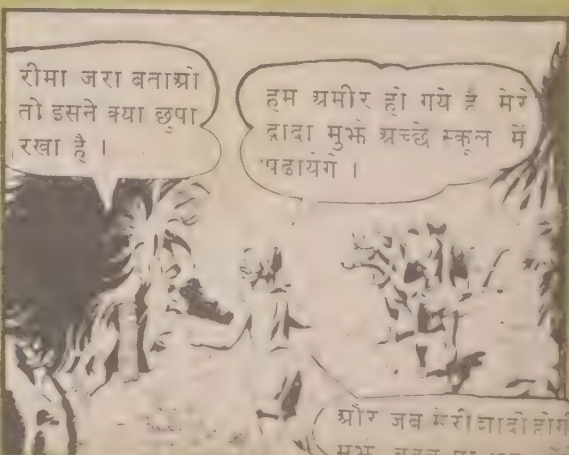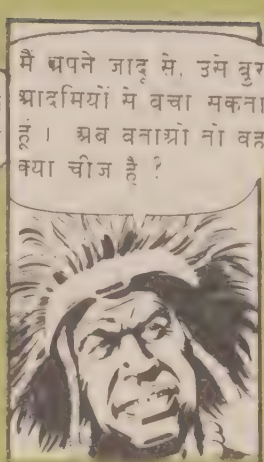
झरोखा अगले अंक का
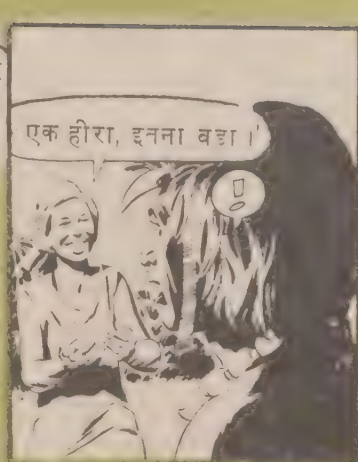
1 सिलबिल पिलपिल सत्यवादी बने
2 दीवाना खिलवाड़ ओलम्पिक चिन्हों के साथ
3 मोटू पतलू समुद्री खजाने की खोज में
4 फिल्म पैरोडी सबसे बड़ा रूपय्या
5 यंत्र मानव युग - रहस्य कथा
6 फीचर तेरह नम्बर अपशकुन

आज ही अपनी कापी रिज़र्व कराइये !

आपके पत्र

मैं दीवाना का नियमित पाठक हूं। अंक २७ मिला, मोटू-पतलू पढ़ कर तो मजा आ गया। पिलपिल-सिलबिल बहुत अच्छे थे। कहानी 'विष की पोटली' अच्छी लगी। अब तो दीवाने ने हमको दीवाना बना दिया है। —कृपाल छोकरा, लुधियाना

जल्दी बताइये कि दीवाना का बीज कब फूल देगा इसी चिन्ता ने मुझे दीवाना कर दिया है कि कहीं मेरे सोते-सोते चिल्ली फूल निकल आया और मैं उसे न देख सका? मैंने बीज बड़ी सावधानी से बो दिया है— पानी भी दिन में चार बार देता हूं। —सुनील भार्गव, दिल्ली

वाह-वाह इस बार तो आपने कमाल कर दिया लेकिन आप हैं कंजूस। दीवानगी के बीज का पैकिट खोलने पर मेरे परिवार के सब सदस्य उस पर टूट पड़े। मगर, निकले उसमें से केवल दो बीज, खैर हम भी हार मानने वाले नहीं, हर बीज के चार-चार हिस्से करके हमने आपस में बांट लिये। अब देखते हैं किसका पौधा पहले निकलता है। —दामोदरन राय, जोधपुर

मैं 'छोटी-सी बात' करके बाहर निकला ही था कि हवा में एक सफेद रंग का उड़ता हुआ गुब्बारा देखा, पकड़ने की कोशिश की, पर हाथ न आया। कुछ गुब्बारे विभिन्न रंग के और देखे। ध्यान से देखा तो पता चला कि वे मोटू पतलू चेलाराम घसीटाराम, राजकुमारी, नानी, ड्राइवर, कुक और हमारा चिल्ली थे। इन्हें पकड़ने की कोशिश की, पर वे भी जीभ दिखाते हुए उड़ गये। मेरी मायूसी देख कर सबसे ऊपर वाला गुब्बारा (जो शायद चिल्ली था) बोला—पहले प्रति गुब्बारे के १० पैसे मेरी भेंट चढ़ाओ, तब इन्हें हासिल कर सकोगे। गिना, तो कुल १० गुब्बारे थे। और मेरी जेब में भी सिर्फ १ रुपया था। १ रुपया दिया और गुब्बारे लेकर अल्पना से पैदल ही अपने घर चल पड़ा। क्योंकि किराया गुब्बारों की भेंट चढ़ चुका था।

—शील कुमार शर्मा नई दिल्ली

दीवाना का २६-वां अंक काफी दीवानगी के उपरान्त हस्तगत हुआ। मुखपृष्ठ काफी आकर्षक था। दीवाना का प्रत्येक अंक अपनी अलग विशेषता रखता है इसके लिए चिल्ली महोदय और उनके सहयोगी बधाई के पात्र हैं। जबसे मोटू-पतलू का आगमन दीवाना में हुआ है पाठकों की दीवानगी कई गुना बढ़ गई है। कथा 'आम और खास' में लेखक की कल्पना और हास्य प्रशंसनीय है। —श्रीमती आशा, मुजफ्फरपुर

इस बार मैंने दीवाना में एक नई प्रतियोगिता पढ़ी तो खुशी का ठिकाना ना रहा। और उसका सही हल खोज कर आपको भेजने के लिए उत्सुक हो उठा। सही हल है—

'आप दीवाने हैं।'

जो कि किताब को नीचे की ओर से थोड़ा सा उठाकर देखने पर साफ दिखाई देता है। मुकेश चन्द्र बंसल—बदायूं

अर्थ-अनर्थ

लीजिये! पाठकों के मनोरंजन के लिये प्रस्तुत हैं कुछ विचित्र वाक्य!

कमल नरेशेनु—अमृतसर

● एक दुकान पर बहुत भीड़ लगी थी। काफी देर से आया हुआ एक ग्राहक जो सामान खरीद चुका था लेकिन उसका सामान लिफाफे में पैक नहीं हुआ था, बोला, 'पहले मुझे लिफाफे में डाल दो'।

(साहब! आपके साईज का लिफाफा तो आर्डर देने पर ही बनेगा।)

सरदार दारासिंह—मदन गंज, किशनगढ़

● 'हम पूरे स्कूल को लेकर पिकनिक पर जायेंगे', एक मास्टर दूसरे मास्टर से बोला।

(इस स्कूल की नींव बड़ी गहरी है, खोदते-खोदते थक जाओगे, यह ध्यान रखना।)

गोविन्द सिंह—अजमेर (राज०)

● एक यात्री तांगे वाले से बोला, 'बोलो, स्टेशन का क्या लोगे?'

(सिर्फ स्टेशन ही खरीदना है या वहां खड़ी हुई रेल गाड़ियां भी?)

कु० पुष्पा वरन—इलाहबाद

● मुझे ठीक आठ बजे बनारस के लिये छूटने वाली रेल पकड़नी है।

(जान जोखिम में डालने वाला काम है जरा कस के पकड़ना रेल को।)

सुरेश कुमार गुप्ता—कालपी

एक कपड़े वाला अपने ग्राहक से पूछने लगा, 'साहब आपको कितना काट दूं?'

(पूछना क्या है, ऊपर से नीचे तक काट दे, साहब को)

कृष्ण गोपाल विद्यार्थी—बहादुरगढ़ हरियाणा

यह हमारा अपना देश है। आइये हम सब मिलकर इसे ऊंचा उठायें।

(पहले यह बताओ कितना ऊंचा उठाना है, ताकि उसी हिसाब से क्रेन फिट की जाये?)

● **पाठकों से अनुरोध है कि वे भी इसी प्रकार के दीवाने वाक्य बना कर दीवाना में भेजें। स्वीकृत वाक्य को प्रेषक के नाम के साथ दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा! पत्र के स्थान पर नीचे दिया गया कूपन काट कर चिपका दीजिये! बिना कूपन वाले पत्र पर ध्यान नहीं दिया जायेगा!**

अर्थ-अनर्थ
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-2

पिछले सप्ताह एक मशीनी मानव ने घसीटाराम को पकड़ लिया था और मोटू-पतलू, चेलाराम और डाक्टर झटका भी एक उड़न तशतरी में बंदी बनकर एक अनजाने ग्रह पर पहुंच गये थे। वहां चेलाराम को एक अजीब जानवर ने पकड़ लिया था। इसके बाद आपके प्रिय कलाकारों पर क्या बीत रही है, यह आगे की चित्र कथा में देखिए और इनकी हालत पर आपको रोना न आए तो अपनी आंखों में एक किलो ग्लीसरीन डाल लीजिये।

कागज पर बनी हमारी इस फिल्म के कलाकार इस प्रकार हैं
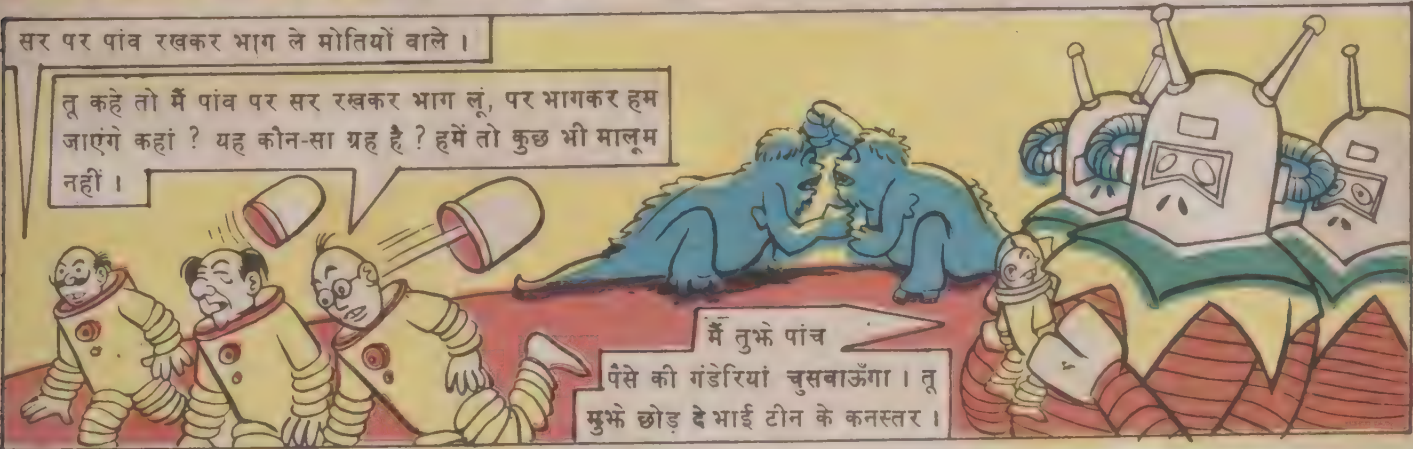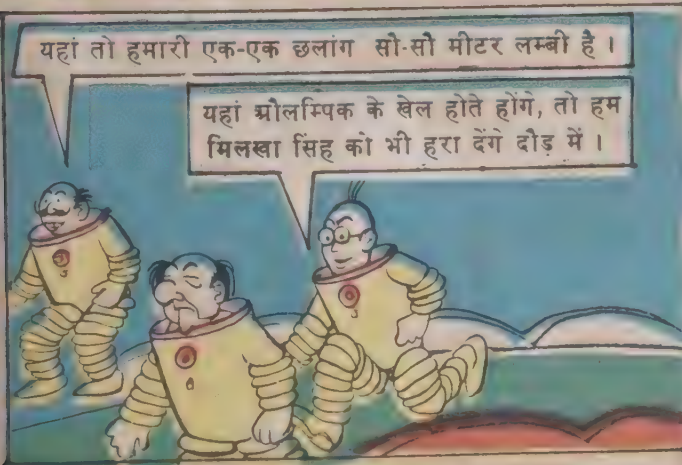
अब जरा जान में जान आई, इस बोझ से छुटकारा पाकर ।
पांव के नीचे चिड़िया का बच्चा दबा दिया है डाक्टर झटका ने ।

इसे कुछ दिखाई नहीं देता, करेले का मसाला भर दो इसकी आंखों में ।
शोर क्यों मचा रहे हो, मैं अपनी जेब में सब दवाईयां रखता हूं । अभी एक इंजैक्शन लगाकर इसे ठीक कर दूंगा ।
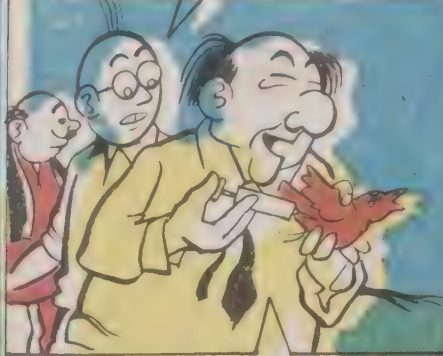
इंजैक्शन लगते ही चिड़िया तेजी से बड़ी होने लगी ।

और देखते ही देखते चिड़िया का बच्चा हाथी का बाप बन गया ।
अरे यह कौन से टॉनिक का इंजेक्शन लगा दिया इसके ?

मुझे क्या पता इस ग्रह पर कौन-सी दवा का क्या असर होगा ?
तुम्हारी ग्रह की अकल मारी गई है जो अब इस खुम्बी के इंजेक्शन लगा रहे हो ?

इंजेक्शन का असर हो रहा है खुम्बी पर भी ।

हो गया कबाड़ा । इस ग्रह पर मैंने अपनी डाक्टरी की प्रैक्टिस शुरू की, तो क्या वह भी इसी तरह फूले फलेगी ?
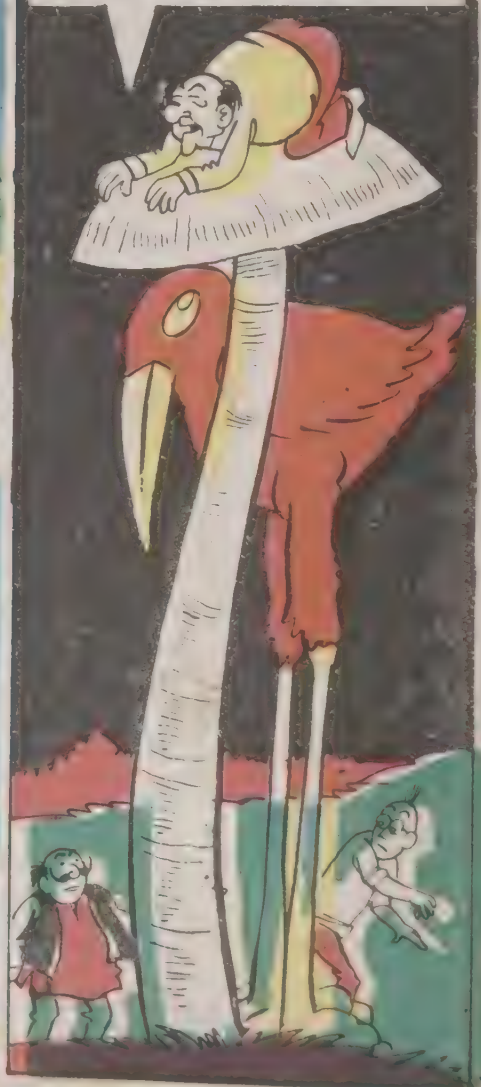
चिड़िया से पूछ लो, यह चाहती क्या है ?
मेरे सामने शर्मिला टैगोर होती तो मैं कुछ पूछता अच्छा भी लगता । इस चिड़िया से क्या पूछूं ।
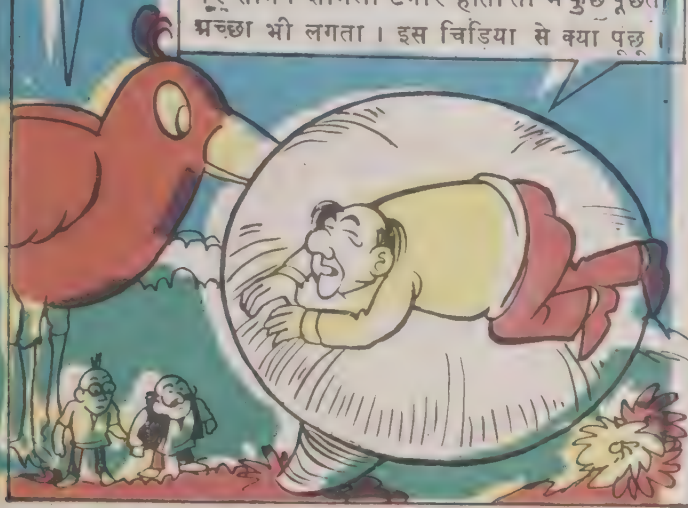
अरे यह क्या कर रही है चिड़िया रानी ?
लगता है अब तुम्हें अपने बच्चे की तरह पालेगी और तुम्हें केंचवे और कीड़े मकौड़े खिलाएगी ।
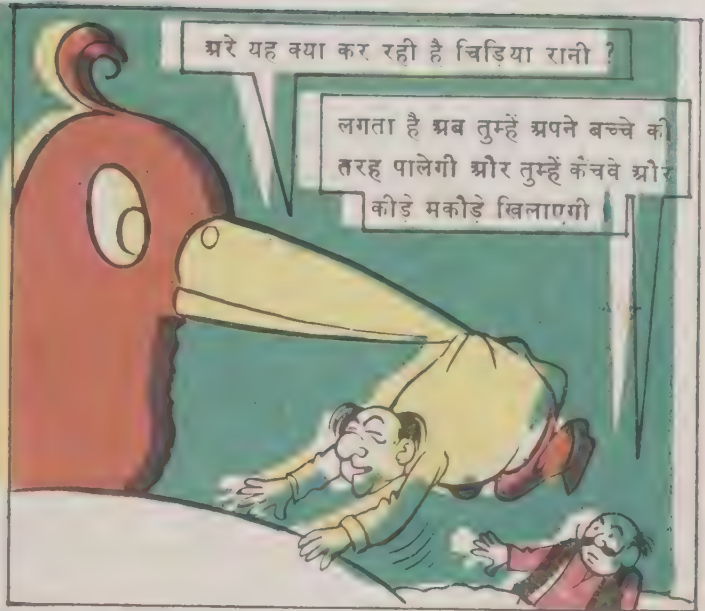
अरे मेरी गाड़ी को भी टोचन कर लो अपने साथ ।
अपने पांव को फुल एक्सीलेटर देकर टाप गीयर में दौड़ा दो ।

इस ग्रह पर आ ही गये हैं, तो इसके बारे में कुछ खोज कर लो ।
पहली खोज तो यही है कि हमारी दुनिया वाले समझते हैं कि केवल उन्हीं की धरती पर आबादी है ।
इस ग्रह की आबादी देख लें तो उनकी आंखें मेरी आँखों की तरह फटी की फटी रह जाएं

दूसरी खोज यह है कि जिस घास पर हम चल रहे हैं उसका रंग मटियाला है । घास के नीचे की धरती नर्म-नर्म और गर्म-गर्म है ।
यह घास साँस लेती हुई सी लगती है ।
सांस तो लेगी ही फूल पोधों में और घास में भी जान होती है ।

यहां ग्राकर कुछ ऐसा लगा है जैसे खतरा टल गया है ।ग्रौर हम सुरक्षित हैं ।
ग्राग्रो इस गुफा में कुछ देर ग्राराम कर लो ।

बाहर ठंड है ग्रौर ग्रन्दर कितनी गर्मी है ।
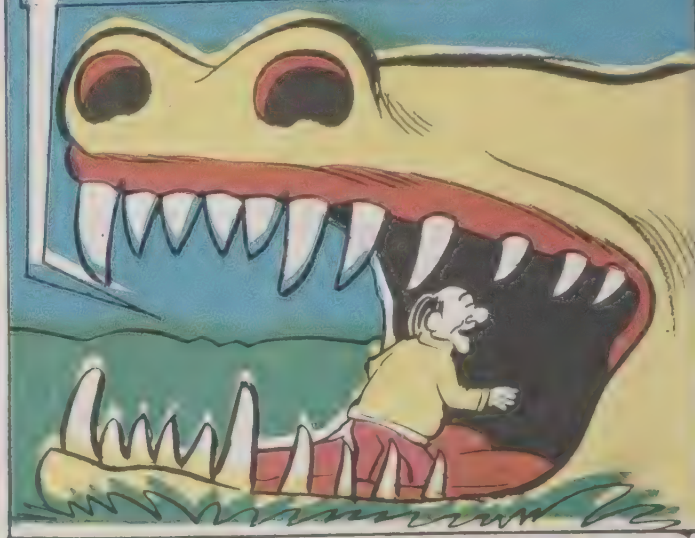
यह कैसी चट्टानों की नोकें सी निकली हुई हैं ? ग्रजीब गुफा है यह
ग्ररे यह ग्रांखें है तुम्हारी या नींबू की फांकें ? दांतों को गुफा की चट्टानें बता रहे हो । बाहर निकलो जल्दी से ।
ब...ब...
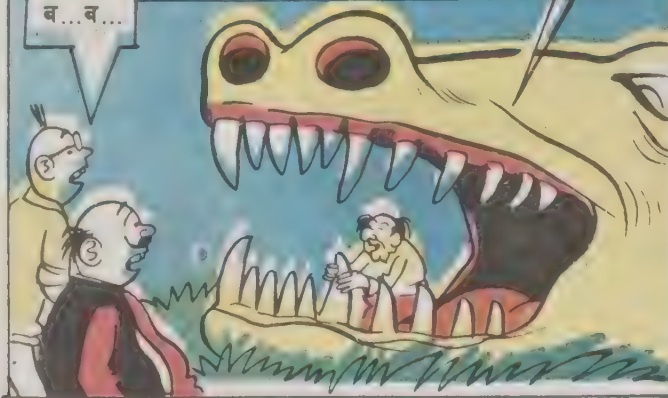
ब...ब...ब...
हो गया कबाड़ा । डाक्टर झटका का तो हो गया झटका ।

क्या हो रहा है यह ? मेरी जान को कोई खतरा था क्या ?

वह चिड़िया जरूर खुद को तुम्हारी मां समझती है । वरना वह तुम्हारी जान न बचाती ।
वह सामने एक महल दिखाई दे रहा है । वहां चलकर देखो । क्या हम किसी प्रकार सुरक्षा पूर्वक ग्रपनी धरती पर वापस जा सकते हैं ?
चेलाराम ग्रौर घसीटाराम कहां हैं, यह भी तो पता लगाना है ?

मोटू पतलू और डाक्टर झटका महल के अन्दर पहुंचे तो जैसे वे अब किसी तीसरी दुनिया में पहुंच गये थे।
अरे मेरे दिल पर हाथ रखकर देख मैं जिन्दा हूं या मर गया हूं?
इस ग्रह पर यह हालत है, इतना तो सोच भी नहीं सकते हमारी दुनिया वाले।
और मैं यहां का राजकुमार चेला शक्ति बन गया हूं जी।
मैं यहां की महारानी महा शक्ति हूँ।
मेरे नये मेहमानों सीधे मेरे पास चले आओ।
यहां महारानी महा शक्ति का राज्य कैसा होगा, तुम्हारी धरती वाले इस की कल्पना भी नहीं कर सकते?
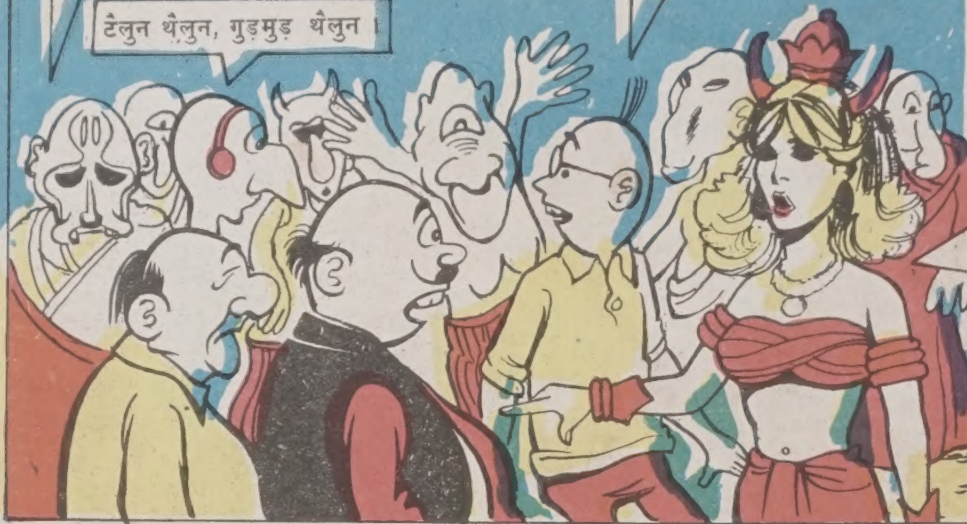
तुम समझते हो तुम चांद पर पहुंच गये हो और मंगल ग्रह पर अपना स्पेसशिप भेजने की योजना बना रहे हो तो तुम ने अंतरिक्ष पर कोई बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर ली है ! तुमने तो अभी कबूतर के बराबर भी उड़ान नहीं भरी है । शुक्र ग्रह की महारानी महा शक्ति पूरे ब्रह्माण्ड पर विजय प्राप्तकर चुकी हैं । सूर्य मण्डल का कोई ग्रह ऐसा नहीं जहां महा रानी महाशक्ति के रेडियाई लहरों से चलने वाले कम्प्यूटर युक्त मशीनी आदमी न पहुंचे हों ।

सर में दर्द है ? मशीनी डाक्टर क्या करेगा? मैं लगा दूंगा इसके इंजैक्शन। यह मेरे इलाज से खुश हो गई तो मुझे महाराजा बना देगी यहां का जैसे चेलाराम को राजकुमार बनाया है ।

मैं चिमगादड़ नहीं हूं, डाक्टर झटका हूं । सर दर्द के लिए इंजैक्शन लगा रहा हूं ।

डाक्टर झटका का इंजैक्शन लगते ही महारानी ऐसे पिघलने लगती है जैसे बर्फ की सिल्ली पिघलती है ।

अरें यह कौन-सा एंटी स्टैबलेटी इंजैक्शन लगा दिया । यह क्या हो रहा है मुझे ?

देखते ही देखते महारानी पानी की तरह बहकर फर्श पर फैल गई । उसके साथ ही उसकी सारी वैज्ञानिक शक्तियां भी समाप्त हो गई थीं ।
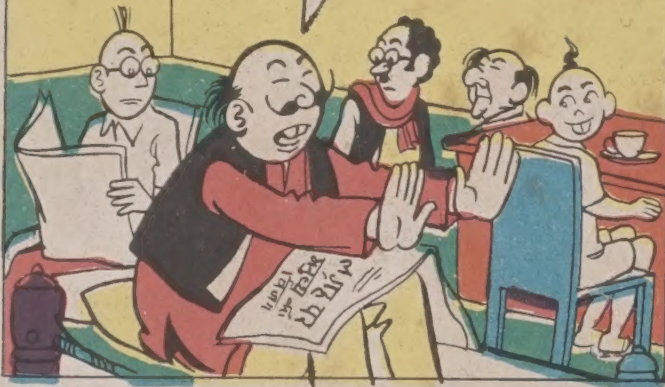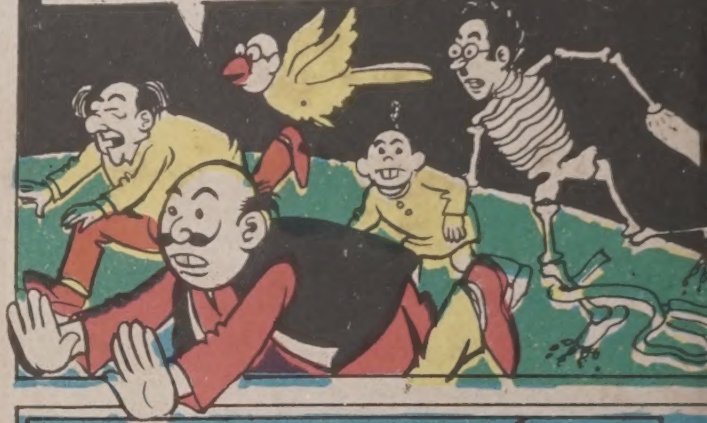
अपने इन प्रिय कलाकारों के नये-नये करतब देखना न भूलिए यह असली कलाकार अब आपको स्थ